फरीदाबाद
मजदूर समाचार
दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा
नई सीरीज नम्बर 75 — सितम्बर 1994

इस अंक में

जापानी मैनेजमेंट

जापान में शुरु हुई निसान कम्पनी की अब कई देशों में फैक्ट्रियां हैं। इंग्लैंड में निसान मोटर मैनुफैक्चरिंग में 4 हजार मजदूर काम करते हैं और 1993 में उन्होंने दो लाख कारें बनाई।

दुनियाँ-भर की मैनेजमेंटों में आजकल जापानी मैनेजमेंट तकनीक की शोहरत वाजिब है लेकिन मजदूरों के बीच भी जापानी कम्पनियों की बड़ाई के किस्से काफी फैले हुये हैं। हकीकत की एक झलक के लिये "साइन्स ऐज कल्चर" में छपा इंग्लैंड स्थित निसान मोटर फैक्ट्री के मजदूरों का इन्टरव्यू प्रस्तुत है।

प्रश्न : अगर तुम्हें टट्टी-पेशाब के लिये टॉयलेट जाना पड़े तो क्या होता है?

मजदूर जोहन : कोई चान्स नहीं। ब्रेक के लिये रोकना ही होगा।

प्रश्न : तुम्हें छुड़ाने के लिये, तुम्हारी जगह आ कर तुम्हें मदद करने के लिये कोई नहीं होता क्या?

मजदूर जोहन : कभी-कभार सुपरवाइजर छुड़ाता है पर बहुत ही कम मौकों पर। सुपरवाइजर हमेशा ही आगे लाइन पर मशीनों को देख रहा होता है।

प्रश्न : अगर कोई बीमार हो जाये तो क्या होता है?

मजदूर जोहन : एक बार मैं बीमार हो गया था पर वे मुझसे बस काम करवाते ही रहे जब तक कि मेरी हालत बहुत खराब नहीं हो गई। एक बन्दा दूसरी साइड में काम करता था, मैं उसे नहीं जानता। एक दिन वह खाना लेते समय बेहोश हो कर गिर पड़ा, प्लेट के साथ खाना जमीन पर बिखर गया। उन्होंने उसे उठाया और ले गये। एक बजने में बीस मिनट पर जब हमने फिर काम करना शुरु किया तब वह बन्दा प्रोडक्शन लाइन पर खड़ा था।

प्रश्न : शरीर के लिये काम कितना भारी है?

मजदूर जोहन : ऐसे समय हैं जब काम का बहुत बोझ होता है। गर्मियों में बहुत कारें बनानी पड़ती हैं, लाइन की रफ्तार बढ़ा दी जाती है। कुछ मौकों पर जब माँग कम होती है तब लाइन की रफ्तार कम कर दी जाती है। कभी हम एक दिन में 350 कारें बनाते हैं और कभी 300 या 250।

प्रश्न : काम खत्म होने पर तुम्हें कैसा लगता है?

मजदूर जोहन : बेहद टूटा हुआ महसूस करता हूँ। खासकर इसलिये कि पेन्ट शॉप में हम लोगों को काम खत्म करने के बाद सफाई करनी पड़ती है। पेन्ट शॉप में बाल्टियों में थिन्नर भर कर एक घन्टे और काम करना पड़ता है।

प्रश्न : मशीन की बेसिक मेंटेनैन्स स्वयं करने की तुम्हें ट्रेनिंग दी जाती है?

मजदूर बिल : मेंटेनैंस खुद करने की ट्रेनिंग दी जाती है लेकिन मेंटेनैन्स वरकरों की जरूरत पड़ती है तो वे दौड़ते हुये आते हैं। अपने क्षेत्र में मेंटेनैन्स हर कोई सीख जाता है पर अगर कोई काफी अच्छा है तो वे उसे कहीं भी भेज देते हैं।

प्रश्न : काफी अच्छा से तुम्हारा क्या मतलब है?

मजदूर बिल : अगर कोई स्टैन्डर्ड टाइम से काम कर लेता है, यह लाइन की स्पीड जितनी तेजी से काम करना है, तो उसे अगले सैक्शन को पार्ट्स ले जाने या ऐसा ही अन्य काम करना पड़ता है। यह उतना भारी नहीं है जैसा कि लगता है क्योंकि हम भाग्यशाली हैं। हम में से कुछ लोग स्टैन्डर्ड टाइम से कम समय में काम कर लेते हैं और अपने काम का स्टॉक लगा कर किसी अन्य को मदद कर सकते हैं।

प्रश्न : क्या स्टैन्डर्ड टाइम बदलता है? क्या काम काफी तेज हो गया है?

मजदूर बिल : बेशक! काम की रफ्तार आश्चर्यजनक है।

प्रश्न : क्या उच्चतर प्रोडक्शन कोटा के संग-संग काम की रफ्तार बढी है?

मजदूर बिल : प्रोडक्शन कोटा पूरा करने के लिये रफ्तार बढाई गई है लेकिन काम की रफ्तार आहिस्ता-आहिस्ता लगातार भी बढाई जाती है। वे क्या करते हैं कि हमें किसी दिन के लिये एक संख्या दे देते हैं और हम सब कहते हैं, "हम कभी भी उतना नहीं कर सकते"। लेकिन हम कर सकते हैं, यह आश्चर्यजनक है कि कैसे हम उसे कर लेते हैं। उस समय वे एक्स्ट्रा लोग भी लगा देते हैं।

प्रश्न : तो क्या खाली समय नहीं होता?

मजदूर बिल : कोई-कोई चाहे तो निकाल सकता है पर आपको अपने साथियों का भी सोचना पड़ता है और उन्हें काम पूरा करने में मदद करनी पड़ती है। लेकिन उन्होंने काम इतना बढा दिया है कि खाली टाइम निकालना बहुत मुश्किल हो गया है। दिन की शिफ्ट में 10 बजे 15 मिनट का ब्रेक होता है और फिर पौने तीन से तीन बजे तक। यह खाने के अलावा है। अपने काम से अलग मुझे थोड़ी-थोड़ी देर बाद स्पॉट वैल्डिंग चैक करनी होती है।

प्रश्न : शिफ्ट पूरी होने तक तुम थक जाते हो क्या?

मजदूर बिल : जी हाँ, मैं बहुत थक जाता हूँ।

प्रश्न : क्या तुम इससे चिन्तित रहते हो कि तुम्हें हर रोज यह काम करना है?

मजदूर बिल : अब नहीं। मुझे इसकी आदत पड़ गई है और ज्यादातर बन्दे इसे बस स्वीकार किये हुये हैं। ऐसे भी दिन होते हैं जब हमारे पास एक स्पेयर आदमी होता है और कम से कम एक तो हमारे पास होना ही चाहिये, लेकिन अधिकतर समय उसे लिगर लाइन पर खाली जगह भरने के लिये भेज दिया जाता है क्योंकि वहाँ बंदों के ज्यादा बीमार पड़ने से उन्हें काफी परेशानी होती है।

मजदूर बिल की पत्नी म्युरियल बोल पड़ी : उन्होंने इन्हें जैसा बना दिया है उसके लिये मैं निसान से नफरत करती हूँ।

प्रश्न : आपका क्या मतलब है?

सुश्री म्युरियल : इसलिये कि यह इतने थके रहते हैं और वहाँ लगने के बाद इनका वजन 10 किलो घट गया है। मुझे याद आता है नई-नई नौकरी लगने के दिनों एक शाम इनका खाना खाते-खाते सो जाना। यह कहते रहते हैं, "टी वी पर फलाँ कार्यक्रम मैं जरूर देखना चाहता हूँ" लेकिन हर बार कार्यक्रम पूरा होने से पहले ही सो जाते हैं।

बाटा

मैनेजमेंट 1982 में एग्रीमेंट के वक्त 7 महीने, 1985 में साढे ग्यारह महीने और 1989 में 8 महीने खा गई। दस साल में एक एग्रीमेंट को हजम कर गई बाटा मैनेजमेंट इस बार एक साल से ऊपर टाइम खाने की तैयारी कर चुकी है। हाल ही में एस्कोर्ट्स मैनेजमेंट ने एक साल डकार कर, हर मजदूर को 60-70 हजार का नुकसान कर भरपाई के नाम पर तीन हजार की रेवड़ी बाँटी। बाटा मैनेजमेंट एक साल खा कर हजार-बारह सौ का झुनझुना मजदूरों को पकड़ाने के प्रति बेफिक्र-सी लगती है।

इधर डी ए में प्रति आँकड़ा एक रुपया 81 पैसे की जगह दो रुपये की डिमान्ड बाटा में जोर पकड़ रही लगती है। 30 अगस्त से भूख हड़ताल के इर्द-गिर्द गतिविधियां तेज हो रही हैं। पहली सितम्बर को शहर में जलूस निकला और 2 को बाटा के वरकरों ने सामुहिक भूख हड़ताल की। कैंटीन वरकर तथा ठेकेदारों के अन्य वरकर जलूस में गये और 2 सितम्बर को भूख हड़ताल में भी शामिल थे।। ऐसे में मैनेजमेंटों द्वारा जगह-जगह और बार-बार अपनाई जा रही पालिसी पर गौर करने की जरूरत है। फोर्ड मैनेजमेंट ने हाल ही में छुट्टियों के मामले पर मजदूरों के उभार को दबाने के लिये इस-उस आरोप में दर्जन से ऊपर वरकर सस्पैंड किये और "किसी की नौकरी नहीं जानी चाहिये" को नया मुद्दा बना दिया तथा छुट्टियों की बात को आई-गई करने के बदले में सस्पैंड वरकरों को ड्यूटी पर लिया। कुछ समय पहले हरियाणा सरकार ने कर्मचारियों की मुख्य डिमान्ड को रफा-दफा करने के लिए दस हजार कर्मचारियों को डिसमिस कर दिया था और मनमाफिक एग्रीमेंट कर सब की बर्खास्तगी वापस ले ली थी। भूख हड़ताल और सामुहिक कदम जारी रहने पर ऐसी ही हरकत बाटा मैनेजमेंट द्वारा करने की काफी सम्भावना है।

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद -121001 (यह जगह बाटा चौक के पास है)

मजदूरों द्वारा अपने अनुभवों और विचारों को प्रस्तुत करने के लिये लिखे लेखों और रिपोर्टों को हम इस पन्ने पर छापेंगे। ऐसे लेख और रिपोर्ट हमारे लिये खुशी की चीज हैं। अपनी बात हमें लिख कर दें। आपको अपनी बातें छपवाने के लिये कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे।

सुपर अलॉय कास्ट में एक्सीडेन्ट

मेरा नाम मनोज कुमार है। मैं सुपर अलॉय कास्ट, प्लाट नं. 62 सैक्टर 6 में काम करता था। इसके पहले सुपर अलॉय की ही एक कम्पनी फरीदाबाद टूल, प्लाट नं. 130 सैक्टर 6 में डाई कास्टिंग मशीन पर हैल्पर था। मैंने मशीन अच्छी तरह चलानी सीख ली तब मुझे सुपर अलॉय कास्ट प्लाट नं.62 में बुला लिया। इन दोनों कम्पनियों के अन्दर काम करते मुझे 8 महीने के करीब हो गये थे। मैं दूसरी शिफ्ट (3P.M. To 11P.M.) की ड्यूटी में था। 11.3.94 को मशीन पर कम्पनी में 10.20 बजे रात्रि में मेरा एक्सीडेन्ट हो गया। मेरा बाँया हाथ पूरी तरह से बर्बाद हो गया। एक्सीडेन्ट होने का कारण यह था कि प्लेंजर फँस गया था। मैंने प्लेंजर निकालने का बहुत प्रयास किया। प्लेंजर नहीं निकलने पर मैंने डाई को ओपन किया। आगे से एक प्लेंजर लगा कर ठोक रहा था कि मेरी दाहिने हाथ की कोहनी गलती से स्विच में लग गई। डाई तुरन्त ही आगे आ गई। मैंने अपने हाथ से स्विच को घुमाया और हाथ बाहर निकाला।

मैं मशीन पर से भाग कर बाहर निकला और बेहोश हो गया। फैक्ट्री वालों ने मुझे प्रायवेट होस्पिटल भूपेन्द्र नर्सिंग होम सैक्टर 7 में ले जा कर मेरा इलाज कराया। मैं सुबह तक बेहोश पड़ा रहा। आठ दिन तक मैं होस्पिटल में भर्ती रहा। आठ दिन के बाद मैं फिर बोला कि मुझे ई एस आई में ले चलो तो फैक्ट्री के स्टाफ वाले बोले कि ई एस आई में अच्छा इलाज नहीं होगा। हाथ की स्थिति देखो। भविष्य खराब हो जायेगा।

फैक्ट्री का स्टाफ बोला कि तुम चिन्ता क्यों कर रहे हो। हाथ ठीक करा कर तुम्हारी परमानेन्ट नौकरी कर देंगे। ई एस आई तो तुम्हारी पहले से कटती थी अब तुम्हारा फंड, बोनस भी मिलेगा। अब तुम परमानेन्ट हो गये। इन सब लंबी-चौड़ी बातों को सही मान कर मैं प्रायवेट में ही इलाज कराता रहा।

जब एक्सीडेन्ट को हुये करीब 4 महीने का समय बीत गया तो मैं बोला जी मेरा ई एस आई स्लिप दे दो। तो कम्पनी ने बोला कि जब ड्यूटी ज्वाइन कर लोगे तो फिर दे देंगे। जाओ अभी इलाज कराओ। फिर मैं चला आया। कम्पनी ने इस प्रकार मुझे धोखा दे कर रखा।

जब मैं 22.8.94 को ड्यूटी माँगने गया तो बोले कि अब तुम कम्पनी के भरोसे मत रहो, तुम अपना कहीं काम खोज लो। हमने तुम्हारा हाथ ठीक करवा दिया। काम नहीं देंगे। कम्पनी के मैनेजर डी सी शर्मा का भी वैसा ही व्यवहार महसूस हुआ जैसा कि सभी धनी लोगों का हुआ करता है। अब मैं बिलकुल ही असमर्थ हूँ।

27.8.94 – मनोज कुमार, प्रेमनगर झुग्गी नं. 226, सैक्टर - 4, फरीदाबाद

कही-सुनी-देखी

★ **एक पोस्टमैन** से सुना, "हमारी जिन्दगी बुग्गी के भैंसे की तरह है। सारे दिन चलते रहते हैं। काम का बोझ ही इतना ज्यादा है। थोड़ी फुरसत मिलते ही बैठ कर कुछ पढने की बजाय फौरन लेट जाते हैं और सो जाते हैं।"

★ **एक सेक्यूरिटी गार्ड** ने बताया, " हिन्दुस्तान सेक्यूरिटी सर्विस में पहले 12 घंटे के 1350 रुपये महीना मिलते थे। छुट्टी कोई नहीं, तीसों दिन ड्यूटी। अब दत्ता साहब ने 8 घंटे ड्यूटी कर दी है और हमें 30 दिन काम के 900 रुपये देते हैं। लेकिन इनमें से 84 रुपये फन्ड के और 13.50 ई एस आई के काट लेते हैं। महीने में हर रोज ड्यूटी करने पर अपने हाथ में 800 रुपये आते हैं।"

★ **चाय की दुकान पर एक मजदूर** को कहते सुना, "यमराज तो मरे हुओं को ले जाता है। जिन्दों को थाने ले जाते समय पर पुलिस वाले तो साक्षात यमराज होते हैं।"

★ खोखा लगाये **एक पानवाले** से सुना, "धन्धा बहुत मन्दा चल रहा है। लाटरी ने कबाड़ा किया हुआ है। घर से निकलता है आदमी आटा लेने और खरीद लेता है लाटरी कि रात को रोटी के साथ मीट और दारू भी होगी, लेकिन अक्सर रात को आटा भी नहीं रहता। ऐसे में पान-बीड़ी के कहाँ पैसे रहते हैं।"

★ फरीदाबाद में **राष्ट्रीय राजमार्ग** नम्बर 2 यानि मथुरा रोड़ पर 13 अगस्त को 14/5 माइलस्टोन के पास सड़क पर दो-तीन दिन से मरी पड़ी एक गाय देखी। गाय के इस-उस अंग पर से गुजरे वाहनों ने गाय के टुकड़े इधर-उधर बिखेरे-चपटे किये हुये थे। और कव्वे माँस नोच रहे थे।

★ **स्टूडस हेलमेट** बनाने वाली गैजेट्स इंडिया का एक कैजुअल वरकर कह रहा था, "मैनेजमेंट ब्रेक देते समय मजदूरों से दस्तखत भी करवाती है और साथ-साथ अँगूठा भी लगवाती है।"

★ **30 अगस्त से आमरण अनशन** की घोषणा और फरीदाबाद के सभी नागरिकों से समर्थन की अपील का बड़ा पोस्टर जगह-जगह लगा देखा। माँग-पत्र पर शीघ्र समझौते की माँग के साथ पोस्टर में अन्य माँग यह हैं : "2. यूनियन-मैनेजमेंट सम्बन्धों में आई गिरावट को रोकना, 3. फैक्ट्री की पूरी उत्पादन क्षमता का इस्तेमाल"!

★ **एस्कोर्ट्स के एक वरकर** ने बात-चीत में कहा, "हमने अपनी जोन से जिसे लीडर चुना है वह अभी तो ठीक है। हरीशचन्द्र की तरह है।" "क्या वह मशीन पर काम करता है?" "अरे नहीं! यह तो लीडर की कुन्डली में ही नहीं होता। एस्कोर्ट्स में जो लीडर बन जाता है वह काम तो करता ही नहीं।"

★ **ग्यारह वर्षीय बालिका** की जोहड़ से अपनी भैंस निकालते समय डूब कर मृत्यु हो गई। लड़की की माँ को लोग यह दिलासा देते सुने गये, "तू बहुत भाग्यशाली है कि तेरी कुंवारी बेटी मर गई। रि लाखों के खर्च से बच गई, गंगा नहा गई।"

★ **एक अध्यापिका** को उसके ससुराल वालों ने मार दिया। बस्ती वालों ने सामान्य मृत्यु होने पर जैसे करते हैं वैसे मिल कर उसके दाह संस्कार में सहयोग दिया और फिर चुप्पी साध ली। लेकिन अपने-अपने घर की चारदीवारी में मिलने वालों से बस्ती वाले कहते सुने गये, "बेचारी मास्टरनी कत्ल कर दी गई।"

★ **ईरान के लेबर मिनिस्टर** ने मैनेजरों की एक मीटिंग में कहा, "मजदूरों की वर्तमान आमदनी उनके खर्चों के 25 प्रतिशत की ही भरपाई कर सकती है।" – फारसी-अंग्रेजी अखबार 'वरकर टुडे' के मार्च-अप्रैल 94 अंक में देखा।

★ **कम्प्यूटर वाली मशीनें सैट करने वाले वरकर** ने बताया, "बहुत ज्यादा चीजें याद रखनी पड़ती हैं, पूरा प्रोग्राम याद रख कर ही सैटिंग कर सकते हैं। इस वजह से अन्य जरूरी बातें याद रखना मुश्किल हो गया है। लिख लेता हूँ या मेरी पत्नी याद रखने का काम करती है।"

यही है लीला .... का शेष पेज तीन से

बम्बई बम कान्ड में मुख्यमंत्री शरद पवार के हाथ होने की चर्चा खुले आम हो रही है। लगता है कि बम्बई बम कॉंड में पाकिस्तान सरकार और भारत सरकार की भूमिकायें एक-दूसरे की पूरक हैं। और इस जटिल ताने-बाने के किसी खाने में दुबई का व्यापारी दाउद इब्राहीम है तो किसी में पाकिस्तानी व्यापारी तौफीक सिद्दीक जालियावाला, किसी खाने में भिलाई इंजीनियरिंग कारपोरेशन का सुरेन्द्र कुमार जैन है तो किसी में सिम्पलैक्स ग्रुप ऑफ कम्पनीज का मूलचन्द शाह है, किसी खाने में पाकिस्तान की आई एस आई है तो किसी में भारत की रॉ- सी बी आई और अमरीका की सी आई ए। और नरसिम्हा राव, बेनजीर भुट्टो, सोनिया गाँधी, नवाज शरीफ, विद्याचरण शुक्ल, बलराम जाखड़, शरद यादव, बाल ठाकरे, आडवाणी, क्लिंटन इस ताने-बाने के चटकीले रंग के धागे हैं।

जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे 150 मजदूर अगर हर महीने दस-दस रुपये दें तो इस अखबार की पाँच हजार की जगह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।

19 सितम्बर को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 सितम्बर को रात 8 बजे इस अखबार के सितम्बर अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

इस अखबार को हम अधिक संख्या में छापना चाहते हैं ताकि बड़ी तादाद में मजदूर इसे पढ़ें और यह अखबार भी अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिये एक मंच बने। रुपये-पैसे की कमी हमारे लिये एक बाधा है। अगर आप इस अखबार को उपयोगी समझते हैं तो कृपया आर्थिक योगदान भी दें।

सखी-सखा, यही है लीला!

भारत सरकार की सर्वोच्च खुफिया एजेंसी रिसर्च एन्ड एनालिसिस विंग (रॉ) के प्रमुख जे एस बेदी को जून 90 में भिलाई इंजीनियरिंग कारपोरेशन के चेयरमैन-एम डी सुरेन्द्र कुमार जैन ने 20 लाख रुपये दिये। सीलबन्द लिफाफे में सुप्रीम कोर्ट को सौंपी गई सी बी आई द्वारा जब्त जैन बन्धुओं के हिसाब-किताब की गुप्त डायरी के अनुसार रॉ प्रमुख को दी गई इस रकम और जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रन्ट को दी जाने वाली रकम का माध्यम एक ही है। इसी माध्यम से बम्बई में बम विस्फोट करने वालों को तीन करोड़ रुपये मुहैया कराये गये। और इसी माध्यम से कांग्रेस तथा विपक्षी पार्टियों के 42 लीडरों को 52 करोड़ रुपये खिलाये गये। दिल्ली पुलिस के कमिश्नर रहे और फिर सी बी आई के निर्देशक बने विजय करण को अप्रैल 89 और दिसम्बर 90 के बीच 90 लाख रुपये दिये गये। केन्द्रिय मंत्रियों बलराम जाखड़ और विद्याचरण शुक्ल को रकम डालरों में दी गई। मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव पी इन अब्बी ने जैन बन्धुओं के पास मई 89 में 6 लाख, अगस्त 89 में 7 लाख और जून 90 में 2 लाख रुपये जमा करवाये।

पैसा लेने वाले नेताओं की लिस्ट देखिये : राजीव गाँधी दो करोड़, चिमन भाई पटेल एक करोड़ 95 लाख, भजन लाल एक करोड़ 14 लाख, चन्द्रशेखर एक करोड़, कल्याण सिंह कालवी 95 लाख, माधव राव सिंधिया 75 लाख, विद्याचरण शुक्ल 65 लाख 85 हजार, बलराम जाखड़ 61 लाख 24 हजार 8 सौ, लाल कृष्ण आडवाणी 60 लाख, कल्पनाथ राय 54 लाख 75 हजार, एस आर बोम्मई 52 लाख, आर के धवन 50 लाख, देवी लाल 50 लाख, के के तिवारी 30 लाख, नारायण दत्त तिवारी 25 लाख 88 हजार, यशवन्त सिन्हा 21 लाख 18 हजार, अशोक सेन 20 लाख, कमलनाथ 17 लाख, पी शिवशंकर 16 लाख 94 हजार, चौधरी रंजीत सिंह 15 लाख, अर्जुन सिंह 10 लाख 50 हजार, जाफर शरीफ 10 लाख, दिग्विजय सिंह 10 लाख, हरमोहन धवन 10 लाख, राजेश पायलेट 10 लाख, फोतेदार 10 लाख, मोतीलाल वोरा 10 लाख, प्रणब मुखर्जी 10 लाख, बूटा सिंह 7 लाख 50 हजार, आरिफ मोहम्मद खान 7 लाख 50 हजार, शरद यादव 5 लाख, अरुण नेहरू 5 लाख, जगन्नाथ पहाड़िया 5 लाख, चंदूलाल चन्द्राकर 5 लाख, एम जे अकबर 5 लाख, ज्ञानी जैल सिंह 5 लाख, एल पी शाही 3 लाख 50 हजार, मदन लाल खुराना 3 लाख, कृष्णा शाही 2 लाख, ताजदार बाबर एक लाख, विजय कुमार मलहोत्रा एक लाख। और नेताओं के दोस्त ललित सूरी को दस करोड़ रुपये। डायरी में 19 बड़े अफसरों जिन्होंने 50 हजार से 90 लाख रुपये लिये उनकी भी लिस्ट है।

भिलाई इंजीनियरिंग कारपोरेशन के सुरेन्द्र कुमार जैन, बी आर जैन और के के जैन को गिरफ्तार नहीं किया गया है। करोड़ों की रिश्वत के इस मामले के तीन साल पहले प्रकाशित होने के बाद से अब तक यह प्रगति हुई है कि सी बी आई के अफसर जाँच के सिलसिले में काफी दिनों तक लन्दन प्रवास करके लौट आये हैं।

इस लेन-देन में जैन बन्धुओं के साथ मूलचन्द शाह के निकट सम्बन्ध रहे हैं — बंबई बम विस्फोटों के लिये तीन करोड़ रुपये मूलचन्द शाह ने जुटाये थे। जानकारियाँ 29 और 31 अगस्त 94 की 'जनसत्ता' से ली हैं।

जैन बन्धु और मूलचन्द शाह हवाला कारोबार, यानि लुके-छिपे ढँग से एक जगह से पैसे दूसरी जगह पहुँचाने का धन्धा करते हैं। इसके साथ ही सुरेन्द्र कुमार जैन और मूलचन्द शाह उद्योगपति भी हैं, कम्पनियों के चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर हैं।

स्टील प्लान्ट के इर्द-गिर्द स्थित भिलाई इन्डस्ट्रीयल एरिया में भिलाई इंजीनियरिंग कारपोरेशन और सिम्पलैक्स ग्रुप जानी-मानी कम्पनियाँ हैं। इनके चेयरमैन-एम डी सुरेन्द्र कुमार जैन और मूलचन्द शाह एरिया की मैनेजमेंटों में जानी-मानी हस्तियाँ हैं। विद्याचरण शुक्ल का भिलाई क्षेत्र की राजनीति में अच्छा-खासा दखल है। मध्य प्रदेश का मुख्य सचिव भिलाई क्षेत्र की प्रशासनिक व्यवस्था में अहम भूमिका निभाता है। खुफिया एजेंसियाँ और पुलिस क्षेत्र में प्रमुख स्टील प्लान्ट होने और विगत में रूस सरकार-अमरीका सरकार की रूचियों के मद्देनजर भिलाई क्षेत्र में विशेष तौर पर सक्रिय रहती हैं। भिलाई इन्डस्ट्रीयल एरिया की फैक्ट्रियों का धन्धा स्टील प्लान्ट के इर्द-गिर्द घूमता है। स्टील प्लान्ट भारत सरकार का है इसलिये ठेकों-आर्डरों में मंत्रियों-अफसरों का भारी दखल रहता है। भिलाई इंजीनियरिंग कारपोरेशन और सिम्पलैक्स ग्रुप बरसों से चाँदी कूट रही हैं और खूब फली-फूली हैं।

क्षेत्र की अन्य फैक्ट्रियों की ही तरह जैन बन्धुओं और मूलचन्द शाह के नियन्त्रण वाली फैक्ट्रियों में मजदूरों को ठेके पर रखा जाता है, काम स्थाई होने के बावजूद वरकर परमानेन्ट नहीं किये जाते। स्टील प्लान्ट की दल्ली राजहरा स्थित लोहा पत्थर खदानों के मजदूरों के सहयोग से ए सी सी सीमेंट कारखाने में ठेकेदारों के मजदूरों ने 1.3.90 से 26.7.90 तक हड़ताल के बाद सफलता हासिल की। मैनेजमेंट ने मान्यताप्राप्त यूनियन के नेताओं, फुटकर गुंडों और पुलिस रूपी संगठित गुंडों की मदद से हड़ताल तोड़ने की बहुत कोशिश की थी पर सफल नहीं हुई। मजदूरों को मिली इस सफलता का भिलाई इन्डस्ट्रीयल एरिया में तत्काल प्रभाव पड़ा था और मजदूर नये सिरे से संगठित होने लगे थे। मजदूरों के उभार को दबाने के लिये मूलचन्द शाह और सुरेन्द्र कुमार जैन की अगुवाई में एरिया की मैनेजमेंटों, ठेकेदारों, पार्टियों के लीडरों और ट्रेड यूनियनों के सुझाव पर प्रशासन ने 2 अक्टूबर 90 को मजदूरों की आम सभा पर रोक लगा दी थी। खुली गुण्डागर्दी भी की गई पर फिर भी मूलचन्द शाह के सिम्पलैक्स ग्रुप के चार कारखानों में हड़ताल शुरु हो गई।

मैनेजमेंट ने हड़ताल तोड़ने के लिये मध्य प्रदेश के बाहर से भी गुंडे बुलवाये पर सफल नहीं हुई। पुलिस ने लाठी चार्ज - फायरिंग का सिलसिला शुरू करने के साथ-साथ 800 मजदूरों तक को एक बार में गिरफ्तार किया और सरकार ने पाँच-छह साल पुराने केस ढूँढ कर शंकर गुहा नियोगी को जेल में डाला। मजदूर उभार दबा नहीं और काफी खींचा-तान के बाद हाई कोर्ट से नियोगी की जमानत हुई। नियोगी को मजदूर उभार की जड़ मान कर मैनेजमेंटों तथा पुलिस ने उसकी हत्या का फैसला किया। नियोगी ने कैसेट में दर्ज किया कि मूलचन्द शाह, डी आई जी आदि उसकी हत्या की तैयारी कर रहे हैं। और 28 सितम्बर 91 को सोते में गोली मार कर नियोगी की हत्या कर दी गई। लेकिन भिलाई इन्डस्ट्रीयल एरिया का वह मजदूर उभार थमा नहीं। तब पहली जुलाई 92 को 16 मजदूरों को गोलियों से मार कर पुलिस ने उस मजदूर उभार को दबाया।

(बाकी पेज दो पर)

स्वामी राम, स्वामी रावण, स्वामी कृष्ण और उनके बन्धु-बान्धव दास-दासियों के खून-पसीने पर लीला करते थे। क्लिंटन, राव, बेनजीर और उनके संगी-साथी मजदूरों के खून-पसीने पर लीला करते हैं।

विगत में राम, कृष्ण, ईसा, मोहम्मद की अलौकिक शक्ति के किस्से-कहानियाँ हों चाहे आज के तीस मार खाँ नेताओं-अफसरों-विद्वानों-मैनेजिंग डायरेक्टरों-चेयरमैनों की (अधिक सटीकता से कहें तो आज व्यक्ति के रूप में कम्पनी, पार्टी, सरकार, सी बी आई आदि संस्थाओं को देखने-प्रस्तुत करने की प्रवृति के दृष्टिगत उनकी) शक्ति-वैभव-दूरदृष्टि की बातें हों, इन सब की जड़ एक है। लड़खड़ा कर चलते राष्ट्रपति और बूढे दशरथ-अकबर के दबदबे का आधार एक है। और वह आधार है संचित श्रम के रूप में मौजूद ज्ञान व भौतिक साधनों पर अधिकार-नियन्त्रण। सुधारी हुई जमीन, नहर-बाँध, मशीन, पुस्तकालय-विश्वविद्यालय, लेबोरेट्री-फैक्ट्री संचित श्रम के रूप हैं। संचित श्रम और उसके बल पर दासों के सजीव श्रम पर स्वामियों का कन्ट्रोल उनकी शक्ति तथा वैभव के स्रोत थे। लाल किला और ताजमहल बेगार में करवाये गये श्रम की मुँह बोलती मिसाल हैं — किस्से-कहानियों में बेशक शाहजहांओं का जिक्र होता है। हनुमान में कितना बल था यह तो हमें नहीं मालूम पर हाँ, लम्बी माल गाड़ी में जितने डिब्बे, जितना वजन और जिस रफ्तार से आज एक ड्राइवर खींचता है वह किसी भीम के बस से बाहर की बात थी और है। लेकिन ड्राइवर के बल - शक्ति के कोई किस्से-कहानियाँ नहीं हैं क्योंकि सब देखते हैं कि रेल लाइन, इंजन और ड्राइवरी की ट्रेनिंग के रूप में हजारों लोगों के संचित श्रम को एक ड्राइवर का सजीव श्रम हरकत में ला कर भारी-भरकम मालगाड़ी को तेज रफ्तार से खींचता है। ड्राइवर मजदूर है और जाहिर है कि क्या ले जाना है, कहाँ ले जाना है, क्यों ले जाना है उन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं है इसलिये उसकी शक्ति - दूरदृष्टि के किस्से भी नहीं बनते। लेकिन लाखों-करोड़ों लोगों का संचित श्रम जब पर्दे की ओट से मंत्री-संत्री-अफसर-चेयरमैन की शक्ति-वैभव-दूरदृष्टि को चार चाँद लगाता है तब लीलाओं का जन्म होता है, फिर चाहे वे रासलीलायें हों या मिसाइल लीलायें।

मजदूरों के सामुहिक कदमों से जुड़े कुछ सवाल

पिछले तीन अंकों में हमने फरीदाबाद में **एस्कोर्ट्स रेलवे डिवीजन, पलवल साइड से डेली आते एस्कोर्ट्स वरकरों, झालानी टूल्स फस्ट व सैकेन्ड प्लान्ट, गुडईयर, बाटा, एस्कोर्ट्स फस्ट प्लान्ट, कैन्टीन वरकरों, हितकारी पोट्रीज, मीनाक्षी डाइँग एन्ड प्रिंटिंग** और **फोर्ड** के मजदूरों द्वारा मई, जून, जुलाई में उठाये सामुहिक कदमों की चर्चा की है। यहां हम फैक्ट्रियों तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों से जुड़े कुछ सवालों पर विचार आरम्भ करेंगे।

जब कभी किसी मैनेजमेंट का मजदूरों के झुन्ड से पाला पड़ता है तब सब मजदूरों से बात करने की बजाय मैनेजमेंट प्रतिनिधियों से टेबल पर बात करने पर जोर देती हैं। क्यों? जब कभी किसी सरकार का भीड़ से वास्ता पड़ता है तब लोगों से आमने-सामने बात करने की बजाय हर सरकार जोर देती है कि राजधानी पहुँच कर प्रतिनिधि बात करें। क्यों? क्या कारण है कि जिनका मसला होता है उनसे दूर कमरों में टेबल पर दस-बीस के बीच खुसर-पुसर द्वारा "समाधान" एक आम बात बनी हुई है? इस सन्दर्भ में बचपन से मैनेजमेंटों, सरकारों द्वारा घुट्टी में पिलाई जा रही, रटाई जा रही व्यवस्था-अनुशासन, चन्द लोगों की समझदारी और आम लोगों की बेवकूफी आदि-आदि पर चर्चा करना, हमारे विचार से, टाइम वेस्ट करना है। और फिर, बकवासों के व्यापक प्रचार-प्रसार को देखते हुये तथ्य की बातों को दो टूक रखना थोड़ा अखर सकता है पर इससे बेहतर तरीका हमें नहीं मालूम।

कोई भी मैनेजमेंट हो, उसका काम है कम से कम लागत पर अधिक से अधिक और अच्छी से अच्छी क्वालिटी का प्रोडक्शन करवाना। वैसे, आजकल नुकसान को - घाटे को कम से कम करना भी मैनेजमेंटों के काम का उल्लेखनीय हिस्सा बनता जा रहा है। दुनियाँ के हर हिस्से में इसका एक ही अर्थ है : मजदूरों को कम से कम वेतन देना और उनसे अधिक से अधिक काम लेना तथा जरूरत पड़ने पर प्रोडक्शन कट करके, प्रोडक्शन बन्द करके मजदूरों की छँटनी करना। मैनेजमेंटों की इन गतिविधियों में आड़े आते हैं मजदूर। उनके असन्तोष को काबू में रखने, दबाने के लिये मैनेजमेंट के सेक्यूरिटी, परसनल, सुपरवाइजरी स्टाफ, लेबर अफसर, एकाउन्टस स्टाफ, मैनेजर और गुंडों के तन्त्र के साथ-साथ सरकारी तन्त्र है। मन्त्री-जनरल-जज-प्रोफेसर वाले तन्त्र के लीडर-थानेदार-लेबर इन्सपैक्टर-प्रवचनवालों को मजदूर अक्सर देखते हैं और उनकी हकीकत से काफी कुछ परिचित हैं। **दूसरी तरफ मजदूर हैं** जो कम से कम वर्क लोड और अधिक से अधिक वेतन तथा अपनी सुरक्षा चाहते हैं। यही वह मूल कारण है कि मजदूरों और मैनेजमेंटों - सरकारों में दुनियाँ-भर में लगातार खींचातान व टकराव होते हैं। इनके बीच हर मामला ताकत से तय होता है। ताकत के बल पर मजदूर जो कानूनी सहुलियतें हासिल कर लेते हैं वे भी जहाँ या जब मजदूर कमजोर होते हैं, मात्र कागजी बन जाती हैं। ऐसे में मजदूरों और मैनेजमेंटों के बीच सम्बन्ध सुधारने, अच्छे व मधुर सम्बन्ध बनाने की बातें बकवास, धोखाधड़ी अथवा बेवकूफी के अलावा और कुछ नहीं होतीं। सार की बात मजदूरों की ताकत का सवाल है। अपनी ताकत पहचानना और उसे एकत्र करना व बढाना मजदूरों के सम्मुख मुख्य काम है।

अपनी ताकत बढाने के लिये मजदूरों में शक्तिशाली लीडर - पार्टी का विचार काफी व्यापक है। साथ ही, इस राह पर बार-बार लगी ठोकरों ने लीडरों - पार्टियों के प्रति भ्रमों को भी काफी बड़े पैमाने पर कटघरे में खड़ा किया है। लेकिन कोई विकल्प, कोई आलटरनेटिव नहीं होने की धारणा काफी गहरी पैठी है और ऐसे में "सब लीडर - पार्टियाँ बुरे हैं" कहते-जानते अधिकतर मजदूर भी "कम बुरा" छाँटने के चक्कर में बार-बार पड़ते हैं।

अपनी समस्याओं के समाधान के लिये सोचने और कदम तय करने की जिम्मेदारी एक को अथवा पाँच को सौंपना तथा अपने को उनके आदेशों का पालन करने वाला बनाना मजदूरों की ताकत बढ़ाने की राह नहीं है — यह बात बार-बार सामने आ रही है। एक या पाँच का बिक जाना अथवा कुचल दिये जाना आम बात हो गई है। यह भी काफी हद तक मानी जाने वाली बात है कि समस्याओं के सब पहलुओं पर सब मजदूर सक्रिय भूमिका निभायें तो बात आगे बढ़ सकती है। फिर भी, "अपने पास टाइम नहीं है, अपने बच्चे पालने हैं, अपने को बोलना नहीं आता, अपने को जानकारी नहीं है" आदि-आदि की आड़-ओट में रहने की प्रवृति काफी व्यापक है। सामुहिक असन्तोष के विस्फोटों के दौरान इन तर्कों-कुतर्कों को ठुकरा कर मजदूर आगे बढ़ते रहे हैं।

इन परिस्थितियों में मजदूरों के सामुहिक कदम और उनसे जुड़े प्रश्न अत्यन्त महत्वपूर्ण बन गये हैं।

अपनी खुद की पहलकदमी पर जब-तब उठते मजदूरों के सामुहिक कदमों के दौरान मजदूरों को अपनी ताकत के असल स्रोत का अहसास होता है। जब-जब एक फैक्ट्री, एक जगह के मजदूरों के संघर्ष में अन्य फैक्ट्रियों के मजदूर शामिल हो जाते हैं तब-तब अपनी ताकत बढाने वाले बड़े-बड़े कदमों और ताकत बढाने की राह का भी मजदूरों को अहसास होता है। किसी एक को समर्थन दे कर उसे भीम बनाने के दौरान भी उस भीम की ताकत का असल स्रोत स्वयं मजदूरों की सामुहिकता में होने को मजदूर काफी-कुछ पहचानते हैं। एक शब्द में कहें तो, मजदूरों की ताकत और उस ताकत को बढाने की राह एक डिपार्टमेंट, एक शिफ्ट, एक फैक्ट्री, कई फैक्ट्रियों, क्षेत्र के समस्त मजदूरों, प्रान्त-देश-दुनियाँ के मजदूरों की सामुहिकता में है। एक सहज - सरल बात होते हुये भी यह महत्वपूर्ण है। और इससे भी महत्वपूर्ण हैं वे कदम जो इस राह पर हमें आगे बढाते हैं, बढ़ा सकते हैं।

अगले अंक में इस चर्चा को जारी रखते हुए हम फैक्ट्री और बस्ती में रोजमर्रा के सवालों पर सामुहिक कदमों के तौर-तरीकों और उनकी राह की रुकावटों पर चर्चा करेंगे।

ईरान में पिछले साल तेल उद्योग के मजदूरों ने वेतन वृद्धि के लिये हड़ताल की। तेहरान और अन्य शहरों में हड़ताल के जोर पकड़ने पर इस्लामिक सोसाइटी ने इस बात पर जोर दिया कि मजदूरों के प्रतिनिधि उससे आ कर बात करें और अपनी डिमान्डें बतायें लेकिन मजदूरों ने इस्लामिक सोसाइटी की बात को ठुकरा दिया। ईरान सरकार इन हालात में बहुत कम गिरफ्तारियाँ कर पाई और लाठी-गोली भी अधिक नहीं चला पाई। मैनेजमेंट ने मजदूरों की विभिन्न कैटेगरियों को अलग-अलग रियायतें दी और सेक्यूरिटी अधिकारियों से धौंस-धमकियाँ भी खूब दिलवाई फिर भी हड़ताल खत्म करवाने के लिये वेतन वृद्धि करनी पड़ी। मौलवी सरकार के खिलाफ भी सफल हड़ताल की जा सकती है लेकिन एक या पाँच लीडरों की अगुवाई में नहीं बल्कि मजदूरों की सामुहिक हिस्सेदारी - जिम्मेदारी की राह से। (जानकारी फारसी-अंग्रेजी अखबार 'वरकर टुडे' के मार्च-अप्रैल 94 अंक से।)

फैक्ट्रियों में तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना हमारे लिये खुशी का काम है। अगर आपके पास ऐसी जानकारी है तो वह हमें दें।

इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड

इन्डस्ट्रीयल एरिया स्थित इलेक्ट्रोनिक्स मैनेजमेंट ने मजदूरों का जुलाई का वेतन 31 अगस्त तक नहीं दिया था। मजदूरों द्वारा तनखा माँगने पर मैनेजमेंट ने 27 अगस्त को लन्च बाद आधे दिन का ले आफ कर दिया। 28-29 की छुट्टी के बाद 30 को वरकर ड्यूटी पर पहुँचे तब ले आफ कह कर मैनेजमेंट ने फैक्ट्री गेट से मजदूरों को लौटा दिया। 31 अगस्त को मैनेजमेंट ने जब कुछ मजदूरों को फैक्ट्री में दाखिल होने दिया और बाकी की ले आफ की बात की तब इलेक्ट्रोनिक्स के सब मजदूर स्टाफ गेट से फैक्ट्री में घुस गये। मैनेजमेंट ने पुलिस की मदद से सब मजदूरों को फैक्ट्री से बाहर निकाला। तब मजदूरों का जलूस डी सी, लेबर डिपार्टमेंट और फन्ड आफिस गया। मैनेजमेंट ने 1991 से मजदूरों का प्रोविडेन्ट फन्ड जमा नहीं किया है। पी एफ की बकाया राशि 30 लाख रुपये हो जाने पर भी कार्रवाई नहीं करने के लिए मजदूरों ने फन्ड कमिश्नर से रोष प्रकट किया।

मजदूरों का जलूस शुरू होने के बाद मैनेजमेंट ने कहानी गढ़ी और चटपट वरकर गेट पर एक नोटिस चिपकाया तथा उसकी प्रतियाँ इस-उस को भेजी। इलेक्ट्रोनिक्स मैनेजमेंट ने बहाना बनाया कि बिजली में कोई अजीब गड़बड़ी हो जाने से 31 अगस्त को ले आफ की है और साथ ही 240 में से 73 मजदूरों के नाम ड्यूटी के लिये टाँग दिये। हेरा-फेरी कर रही मैनेजमेंट ने बैंकों से 9 करोड़ का कर्ज लिया हुआ है, कम्पनी कई साल से बीमार घोषित है और अब इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड का मामला बी आई एफ आर के सम्मुख है।

वरकरों की ले आफ के बावजूद मैनेजमेंट ने स्टाफ को ड्यूटी पर रखा हुआ है, ओवर टाइम तक करवा रही है पर स्टाफ को तनखा चार महीनों से नहीं दी है।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी — 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।